भारतीय संगीत में अध्यात्मिक परिपक्ष में अवनद्ध वाद्यों की उपयोगिता

अजय पाल सिंह
पी.एच.डी. शोधार्थी, संगीत विभाग, विश्वविद्यालय चण्डीगढ़

भूमिका

भारत की विराट संस्कृति के विकास में हिन्दू, मुस्लिम, सिक्ख जैसे अनेक धर्मो, सम्प्रदायों एवं जातियों का योगदान रहा है। सभी ने उस दिव्य और परम सत्ता के प्रति प्रेम व श्रद्धा का भाव प्रकट करने का माध्यम संगीत को बनाया है। वैसे भी संगीत और धर्म एक दूसरे से भिन्न नहीं। दोनों का ध्येय परमानंद एवं मोक्ष की प्राप्ति है। यह कहना सही है कि धर्म ने संगीत को और संगीत ने धर्म को अधिक से अधिक लोगों तक पहुंचाया। संगीत को अविर्भाव माना जाता है और भारतीय अध्यात्म दर्शन के अनुसार आनंद साक्षात ईश्वर का स्वरूप है। संगीत साध्य भी है और साधन भी।

संगीत शब्द से भारतीय संगीत में गायन वादन तथा नर्तन तीनों कलाओं का बोध होता है।

''गीतं वाद्यं तथा नृत्यं त्रयं संगीतमुच्यतें''

(संगीत रत्नाकर)

संगीत की यह परिभाषा सर्वमान्य है। अनादि काल से गायन वादन नृत्य संगीत के रूपों में अध्यात्मिकता के दर्शन होते है।

संगीत और अध्यात्मिकता का घनिष्ठ संबंध है।

(डा. राजेन्द्र प्रसाद)

भारतीय संगीत अपनी विशेषताओं के कारण विश्व में अनूठा है। भारत में संगीत आमोद प्रमोद की वस्तु नहीं, अपितु उसमें आराधना का भाव है तथा उसमें चिरानंद प्रदान करने वाली आध्यात्मिक साधना है। भारतीय संगीत में ऐसी शक्ति है जो मनुष्य को सांसारिक दुःखो से मुक्ति प्रदान कर ब्रह्म की ओर अग्रसर करती है। संगीत भौतिक सुखों की उपलब्धि के साथ आध्यात्मिक आनंद का प्रदायक है।

अध्यात्म अर्थात आत्मा और ब्रह्म का विवेचन ज्ञान, तत्व एवं आत्म ज्ञान। आध्यात्मवाद अभिप्राय है ब्रह्म और आत्मा का मुख्य मानने का सिद्धांत। संगीत की सृष्टि नाद से हुई है। नाद को ब्रह्म रूप माना है और मनुष्य का अतः करण ब्रह्म स्वरूप है। अध्यात्मवाद ब्रह्म के सर्वव्यापी रूप की निराकार एवं साकार रूप में विवेचना करता है।

भारतीय संगीत में अध्यात्मिक परिपेक्ष संगीत मानव जाति को प्रकृति की एक अनुपम भेंट है। संगीत के बिना मनुष्य के जीवन की परिकल्पना नहीं की जा सकती। प्रत्येक मनुष्य भले ही साधना नहीं करता लेकिन संगीत के आनंद से सराभोर अवश्य होता है। यहां तक कि पशु, पक्षी एवं वनस्पति जगत् भी संगीत के प्रति अपनी आशाजनक प्रतिक्रिया व्यक्त करते है, यह वैज्ञानिक रूप से सिद्ध हो

चुका है। भारतीय संगीत एक आलौकिक विद्या है जिसकी अपनी एक निरंतर, सुदीर्घ, समृद्ध एवं आध्यात्मिक परम्परा है जो वेदों से आरम्भ हो कर भरत तक तथा तदोपरान्त भातखण्डे विष्णु दिगंबर तथा वर्तमान में निरंतर प्रवाहित है और भविष्य में भी सतत् प्रवाहमान रहेगी। भारतीय इतिहास एवं साहित्य का अवलोकन करने पर संगीत और अध्यात्मिकता का गहरा संबंध रहा है।

संगीत के अदृश्य प्रभाव को खोजते हुए भारतीय योगियों को वह सिद्धियां और अध्यात्म का विशाल क्षेत्र उपलब्ध हुआ, जिसे वर्णन करने के लिए एक प्रथक वेद की ही रचना करनी पड़ी। वैदिक युग में यज्ञों द्वारा देवताओं की आराधना तथा परमतत्व के आहवान का माध्यम संगीत ही था। सामगान का छंद आराध्यदेव के प्रति सहज ही भक्ति भावना को आन्दोलित करते थे। वैदिक संस्कृति में उदात्त, अनुदात्त व संगीत की गान परम्परा में नाद को ब्रह्म स्वरूप तथा आराधना का माध्यम स्वीकार किया गया। इस प्रकार वेदों, उपनिषदों आदि में नाद की महिमा का गुणगान तभी से ही अध्यात्म व संगीत के घनिष्ठ संबंध को प्रमाणित करता है। यज्ञों के समय साम संगीत का आयोजन होता था। इस युग में गायन के साथ वादन का भी साहचय रहा। इसमें दुन्दुभि, वाण, वेणु, नाड़ी आदि वाद्यों का उल्लेख मिलता है। जैन सूत्रों में संगीत के तीन तत्वों - गायन वादन नृत्य का उल्लेख मिलता है। इस युग में संगीत सत्यं, शिवं और सुन्दरं से अभिसिचित था, जिसने मानव समाज को नई दिशा दी।

अध्यात्मिक परिपेक्ष में अवनद्ध वाद्यों की उपयोगिता

संगीत में गायन वादन ने अभी तक जितनी यात्रा तय की है उसमें विभिन्न पड़ाव आए है। संगीत से मनुष्य का आध्यात्मिक विकास होता है। भारत में धार्मिक प्रवचनों एवं आयोजनों में संगीत की विशेष भूमिका रही है। इससे श्रोताओं में आध्यात्मिक चेतना जागृत होती है। तीर्थ यात्रा, देव दर्शनों और धार्मिक मेले पर गाते बजाते एवं नाचते हुए जाने की प्रथा प्राचीन है क्योंकि आध्यात्मिक वातावरण को कई गुना बढ़ा देने की क्षमता संगीत में ही है।

अवनद्ध वाद्य ताल प्रधान होते है। गायन, वादन एवं नृत्य के साथ ताल देने के लिए इन चर्मानद्ध वाद्यों का निर्माण हुआ। लय तथा ताल का अनुभव मानव ने सर्वप्रथम प्रकृति से प्रेरित होकर सम्भवत: किया होगा क्योंकि परमात्मा ने सृष्टि में जीवंतता को एक विशेष लय में सृजित किया है। धार्मिक प्रकृति के देश जहां मंदिरों की भरमार है वहां आज प्रत्येक स्थान पर मंदिरों में नगाड़े रखे मिल जाते हैं। मांगलिक कार्यो में नगाड़ा, ढोल, देवी की पूजा, सवारी इत्यादि में ढोलों का प्रयोग अवनद्ध वाद्य की श्रेणी का घोतक है। इन वाद्यों की ध्वनि के सहारे ही समस्त देवी देवताओं की भक्ति म स्वत: ही सनमयता हो जाती है। अवनद्ध वाद्यों में घन वाद्यों की अपक्षा स्वर गुणवत्ता अधिक होती है और इन से बोलो की उत्पत्ति होती है। याज्ञवल्कय ने कहा है कि श्रुति तथा शास्त्र प्रमाण को जानने वाला तथा ताल से अभिज्ञ पुरूष मोक्ष को अनायास प्राप्त कर लेता है। वैदिक युग मे दुंदुभि, पुष्कर आदि वाद्य यंत्रों का प्रचलन था। सगीत व विद्या की देवी मां सरस्वती के वीणा वादिनी रूप से, अधरों पर मुरली घर कृष्ण के रूप से, हाथ में डमरू लिए शंकर के रूप से एवं शंखचक्रयारी विष्णु के रूप से सहज ही आध्यत्मिकता परिलक्षित होती है। वाद्य चाटे तत् सुषिर अवनद्ध एवं धन कोई भी प्रकार का हो, यह

चाहे वाद्य-वृन्द हो या फिर एकल रूप मे बजाए जाने वाले स्वर ताल एवं लय में बजने पर आध्यात्मिक आनंद की अनुभूति कराता है।

उपंग – इसका मिलता जुलता रूप खुजराहों के मंदिरों में खुदी प्रतिमाओं के हाथ में दृष्टिगोचर है।

डमरू-शिव जी के साथ इसका विशेष संबंध है आज भी शिव मंदिरों में आरती आदि साथ इसे बजाने की प्रथा है। महेश्वर सूत्र समस्त वाङ्मय तथा इनमें प्रदर्शित स्वर-वर्ण संगीत स्वरों के आधार है।

दुर्दर – इस वाद्य का प्रयोग भी आध्यात्मिक कार्यो के लिए किया जाता था। वैदिक काल से इस वाद्य का प्रचलन था।

दुन्दुभि – यह प्राचीनतम वाद्य हैं। अति प्राचीनकाल में भूमि-दुंदुभि-दुंदुभि समान वाद्यों की संगति लय धारण के लिए की जाती थी। भूमि-दुंदुभि गड्ढा खोदकर तथा इसको चमड़े से मढ़कर बनाई जाती थी।

नगाड़ा – इस वाद्य का उल्लेख साहित्य में प्रचुर वर्णन है। नगाड़ा आदि का प्रयोग मंदिरों, गुरूद्वारों में प्राचीन काल से ही किया जाता है। यह मिट्टी का बना हुआ होता है।

पणव – मृदंग के समान मणव भी भारत का अति प्राचीन अवनद्ध वाद्य है। इस वाद्य को वैदिक कालीन अवनद्ध वाद्य समझे जा सकते है। रामायण, सुंदरकांड, महाभारत आदि ग्रंथों में अनेक स्थलों पर पणव का उल्लेख हुआ है।

हडुक्का – इस वाद्य का वादन देवी पूजन के समय किया जाता है।

मुरवचंग -चंग का आविष्कार त्रिशूलवत होता है। रामायण तथा महाभारत काल तक मृदंग, पणव पुष्कर, भेरी, जैसे चर्म वाद्यों का प्रचलन या इन वाद्यो का वादन हाथ से और दंड से किया जाता था।

मृदंग – अवनद्ध वाद्यों की श्रेणी में हर युग में चर्म वाद्यों का निर्माण होता गया तथा इन में कुछ समय के साथ आलोप होते गये। पुष्टी मार्गीय हवेली संगीत में ध्रुपद धमार आदि के मृदंग आदि वाद्यों की संगति होती थी।

निगदिन्त मृदंग तं मर्दल मुरजं तथा
प्रोक्तं मृदंगशब्देन मुनिना पुष्कस्त्रयम्।।

मुरज तथा मर्दल को मृदंग का प्रयाय बताया गया है। यह सब अवनद्ध वाद्यों में सर्वश्रेष्ठ बताया है। संस्कृत साहित्य में मृदंग का सर्वप्रथम उल्लेख रामायण तथा महाभारत में पाया जाता है। दक्षिण भारत में मृदंग का प्रयोग सभी गायन शैलियों की संगति के साथ किया जाता था।

पखावज -मध्ययुग में उत्तर भारत में ब्रज तथा बंगाल में मृदंग नाम पखावज प्रचलित हो गया। पखावज को भी मृदंग कहा जाता है। पखावज फारसी भाषा का शब्द है। पखावज शब्द के निर्माण की प्रक्रिया निम्नुसार कड़ी द्वारा दिखाई जा रही है-

पुष्कर - पक्षवाद्य - परवावज - परवावुज - परवावज

धुपद धमार गायन शैली की संगति परवावज के साथ की जाती थी। धुपद-धमार गम्भीर जैसी गम्भीर गायकियाँ प्रचलित थी, जिनमें मृदंग तथा परवावज जैसे गम्भीर वादन द्वारा संगति की जाती थी।

मध्यकाल में अनेकों भक्तों संत कवियों ने वाद्यों की महिमा का व्याख्यान अपने पदों किया है। स्वामी हरिदास जी अपने इस धुपद में वाद्यों का गुणगान किया है।

तबला -आधुनिक समय में अवनद्ध वाद्यों में तबला का महत्वपूर्ण स्थान है। तबला का प्रयोग शास्त्रीय में ही नहीं बल्कि अध्यात्मिक पक्ष में भजन, शब्द आदि की संगति में तबला का प्रयोग किया जाता है। भागवत कथाओं , संकीर्तनों, शब्द आदि में तबला एक सर्वो प्रमुख वाद्य माना गया है। इसका प्रमुख कारण यह भी है कि प्रमुख तबले में परवावज, मृदंग, ढोलक नाल इत्यादि सभी गुण विद्यमान है।

निष्कर्ष

इस प्रकार हम कह सकते है कि भारतीय सगीत और अध्यात्मिकता का घनिष्ठ संबंध है। अवनद्ध वाद्यों के बिना संगीत की कोई भी शाखा हो वह विहीन ही है। अवनद्ध वाद्य प्राण का कार्य करते हैं।

संदर्भ ग्रंथ सूचो

गुप्ता चित्रा, संगीत में ताल वाद्यों की उपयोगिता, अमर कम्पोज़िग कम्पनी शाहदरा नई दिल्ली, 1992।
पराजपे शरतचन्द्रश्रीधर, भारतीय संगात का इतिहास, चौखम्बा विद्याभवन।
मिश्र विजय शंकर, तबला पुराण, कनिष्क पब्लिशर्ज, 2005।
शर्मा नंद लाल, तबला विज्ञान, संगीत का भवन, अलीगढ़ 1952।
श्रीवास्तव गिरीशचंद्र, ताल परिचय, भाग एक, संगीत सदन प्रकाशन इल्हाबाद, 1988।
शर्मा सत्यवती, भारतीय संगीत का इतिहास।
शर्मा भगवत शरण, ताल शास्त्र।
ताल अंक, संगीत कार्यालय, हाथरस।
भक्ति संगीत अंक, संगीत कार्यालय हाथरस।